जिंदगी के दो दिन रहेंगे ताउम्र याद

टूटने लगी थी जिंदगी की आस

अमर उजाला ब्यूरो

गोपेश्वर। आफत की तरह आई आपदा में फंसे तीर्थयात्री जब रेस्क्यू कर तीन दिन में गोविंदघाट से जोशीमठ पहुंचे, तो उन्होंने राहत की सांस ली। अधिकांश तीर्थयात्रियों का कहना था कि उन्हें लगातार हो रही बारिश और नदी के जलस्तर को बढ़ते देख जिंदगी की आस टूटने लगी थी।

मंगलवार को जोशीमठ लाए गए हरियाण निवासी देवेंद्र सिंह, सतेंद्र और मंजीत का कहना है कि उन्हें दूसरी जिंदगी मिली है। सोमवार की रात उन्होंने बदरीनाथ हाईवे पर काटी। मूसलाधार बारिश और नदी की आवाज डरावनी महसूस हो रही थी। यह अंदाजा नहीं लग रहा था कि कल की सुबह देख पाएंगे या नहीं। आंध्र प्रदेश निवासी मानसी का कहना है कि उसने जिंदगी में पहली बार ऐसा मंजर देखा। वह कहती है कि उन्हें अपनी जिंदगी के ये दो दिन ताउम्र याद रहेंगे। दो दिनों तक खाना नहीं खाया। वे 16 जून को बदरीनाथ धाम के दर्शन कर हनुमान चट्टी पहुंचे ही थे कि भारी बारिश से उन्हें यहीं रुकना पड़ा। 17 को भी भारी बारिश के चलते वे पैदल गोविंदघाट तक पहुंचे, लेकिन यहां भी मंजर खौफनाक बना हुआ था। उन्होंने बदरीनाथ हाईवे के किनारे एक चट्टान के नीचे रात बिताई। जोशीमठ आर्मी कैंपस में प्राथमिक उपचार लेने के बाद गाजियाबाद निवासी कविंद्र प्रताप ने बताया कि उन्हें यह दूसरी जिंदगी मिली है। वे अपने चार दोस्तों के साथ बदरीनाथ धाम की तीर्थयात्रा पर निकले थे, लेकिन गोविंदघाट में भारी बारिश से अफरा-तफरी मच गई। मेरे दोस्तों का अभी तक पता नहीं है। वे किस हाल में हैं।